हल्की-नीली दुनिया

लेखक : कार्ल सगान

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

दूर-दराज़ से देखने पर इस छोटे और अदना से बिंदु में किसी की कोई रूचि नहीं होगी. पर हमारे लिए यह हल्का नीला धब्बा बहुत अहम् है. इस नुक्ते को आप ज़रा गौर से देखें. यह हमारा घर है. यहाँ हम रहते हैं. वो हर शख्स जिससे हमें मोहब्बत हो, हर इंसा जिसे हम जानते हों, हर वो शख्स जिसके बारे में हमने कभी सुना हो, हर इन्सान जो कभी पैदा हुआ हो, हर इन्सान जो कभी जिंदा रहा हो, वो यहीं रहा होगा. हमारी सारी खुशियाँ और गम, हजारों धर्म और मज़हब, विचारधाराएँ और आर्थिक नीतियां, हर शिकारी और चारागर, हर हीरो और बुज़दिल, हर इंसानी सभ्यता का निर्माता और उसे ध्वस्त करने वाला, हर बादशाह और किसान, हर प्रेमियों की जोड़ी, हर माँ-बाप, हर उम्मीद लिए बच्चा, हर आविष्कारक और अन्वेषक, नैतिक मूल्य सिखाने वाला हर शिक्षक, हर बेईमान सियासतदार, हर सुपरस्टार, हर महान नेता, हमारी नस्ल के इतिहास में हर महात्मा और पापी यहीं पर रहा होगा - सूरज की किरण से लटके अदना से इस धूल कण पर.

ब्रह्माण्ड की अपार विशालता में हमारी दुनिया, एक बहुत छोटा सा स्टेज है. ज़रा सोचें फौज के उन जनरलों और सम्राटों के बारे में, जिन्होंने चन्द लम्हों की जीत और शौहरत के लिए खून के नाले बहाए. मुश्किल से नज़र आने वाले इस छोटे धब्बे पर, एक हिस्से के वाशिंदों ने, दूसरे हिस्से के लोगों पर तमाम ज़ुल्मो-सितम ढहाए. उनकी गलतफहमियों में कितनी कसक है, और नफरतों में कितनी शिद्दत है. वो एक दूसरे को क़त्ल करने के लिए कितनी जल्दी से तैयार हो जाते हैं.

दिखावे और खुद-बुलंदी ने हमें यह सोचने पर मजबूर किया, कि इस ब्रहमाण्ड में हमें कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं. हलकी सी रौशनी की यह किरण, हमारे इस बहकावे के

लिए एक चुनौती है. ब्रह्माण्ड के इस विशाल अन्धकार में हमारा ग्रह, मंद प्रकाश का महज़ एक धब्बा है. इस अँधेरे सूनेपन में, हम ऐसी कोई उम्मीद न रखें, कि कोई दूर-दराज़ से हमें खुद अपने आपसे बचाने आएगा.

पूरे ब्रह्माण्ड में शायद पृथ्वी ही एक मात्र वो ग्रह है, जहाँ ज़िन्दगी पली-पनपी है. आने वाले भविष्य में ऐसा कोई दूसरा ग्रह नहीं है जहाँ हमारी नस्ल जाकर बस सके. हम अन्य ग्रहों पर घूम-फिर कर ज़रूर वापिस आ सकते हैं पर वहां बस नहीं सकते. हम चाहें या न चाहें, पर अभी के लिए इस धरती पर रहने के अलावा हमारे सामने और कोई चारा नहीं है.

ऐसा कहा जाता है कि खगोल-विज्ञान का विषय इंसान को नम्र और विनयशील बनाता है और चरित्र का निर्माण करता है. छोटी सी दुनिया के इस अक्श में हमें अपनी बेवकूफी और बेगुमानी की सबसे बड़ी मिसाल मिलेगी. जब मैं अपनी इस छोटी सी दुनिया को निहारता हूँ तो वो मुझे अपनी जिम्मेदारियों का एहसास दिलाती है. हम दूसरों से बेहतर तरीके से कैसे पेश आयें? हम अपनी हल्की-नीली और नाज़ुक दुनिया की कैसे देखभाल करें? हम यह न भूलें कि वो आदिकाल से आजतक हमारा घर रही है.

(पुस्तक “कॉसमॉस” का एक अंश)